

15P/276/30

(To be filled up by the candidate by blue/black ball-point pen)

Roll No.

--	--	--	--	--	--	--	--	--

Roll No. (Write the digits in words)

Serial No. of OMR Answer Sheet

Day and Date

(Signature of Invigilator)

INSTRUCTIONS TO CANDIDATES(Use only **blue/black ball-point pen** in the space above and on both sides of the Answer Sheet)

1. Within 10 minutes of the issue of the Question Booklet, check the Question Booklet to ensure that it contains all the pages in correct sequence and that no page/question is missing. In case of faulty Question Booklet bring it to the notice of the Superintendent/Invigilators immediately to obtain a fresh Question Booklet.
2. Do not bring any loose paper, written or blank, inside the Examination Hall *except the Admit Card without its envelope*.
3. *A separate Answer Sheet is given. It should not be folded or mutilated. A second Answer Sheet shall not be provided. Only the Answer Sheet will be evaluated.*
4. Write your Roll Number and Serial Number of the Answer Sheet by pen in the space provided above.
5. *On the front page of the Answer Sheet, write by pen your Roll Number in the space provided at the top and by darkening the circles at the bottom. Also, wherever applicable, write the Question Booklet Number and the Set Number in appropriate places.*
6. *No overwriting is allowed in the entries of Roll No., Question Booklet no. and Set no. (if any) on OMR sheet and Roll No. and OMR sheet no. on the Question Booklet.*
7. *Any change in the aforesaid entries is to be verified by the invigilator, otherwise it will be taken as unfair means.*
8. *Each question in this Booklet is followed by four alternative answers. For each question, you are to record the correct option on the Answer Sheet by darkening the appropriate circle in the corresponding row of the Answer Sheet, by pen as mentioned in the guidelines given on the first page of the Answer Sheet.*
9. For each question, darken only one circle on the Answer Sheet. If you darken more than one circle or darken a circle partially, the answer will be treated as incorrect.
10. *Note that the answer once filled in ink cannot be changed. If you do not wish to attempt a question, leave all the circles in the corresponding row blank (such question will be awarded zero marks).*
11. For rough work, use the inner back page of the title cover and the blank page at the end of this Booklet.
12. Deposit only **OMR Answer Sheet** at the end of the Test.
13. You are not permitted to leave the Examination Hall until the end of the Test.
14. If a candidate attempts to use any form of unfair means, he/she shall be liable to such punishment as the University may determine and impose on him/her.

Total No. of Printed Pages : 28

[उपर्युक्त निर्देश हिन्दी में अन्तिम आवरण पृष्ठ पर दिये गए हैं।]

15P/276/30

ROUGH WORK
रफ़ कार्य

15P/276/30

No. of Questions : 150

प्रश्नों की संख्या : 150

Time : 2 Hours

Full Marks : 450

समय : 2 घण्टे

पूर्णाङ्क : 450

Note : (1) Attempt as many questions as you can. Each question carries **3 (Three)** marks. **One mark will be deducted for each incorrect answer. Zero** mark will be awarded for each unattempted question.

अधिकाधिक प्रश्नों को हल करने का प्रयत्न करें। प्रत्येक प्रश्न **3 (तीन)** अंकों का है। **प्रत्येक गलत उत्तर के लिए एक अंक काटा जायेगा।** प्रत्येक अनुत्तरित प्रश्न का प्राप्तांक **शून्य** होगा।

(2) If more than one alternative answers seem to be approximate to the correct answer, choose the closest one.

यदि एकाधिक वैकल्पिक उत्तर सही उत्तर के निकट प्रतीत हों, तो निकटतम सही उत्तर दें।

01. बुद्धस्य जन्मः अत्र अभवत् :

- | | |
|-----------------|--------------|
| (1) कपिलवस्तु : | (2) लुम्बिनी |
| (3) श्रावस्ती | (4) देवदह : |

02. बुद्धचरितः अस्य कृतिरस्ति

- | | |
|----------------|------------|
| (1) आर्यदेवः | (2) असङ्गः |
| (3) नागार्जुनः | (4) अश्व |

03. सांन्दरानन्द महाकाव्ये मुख्यतः वर्णितः

- (1) माहदेव्याः स्वप्नः
- (2) सिद्धार्थस्य जन्मः
- (3) नन्दसुन्दर्याणां प्रणयः नन्दस्य बौद्धधर्मे दीक्षा च
- (4) निवृत्तिमार्गः

04. मध्यममार्गस्य उपदेष्टा अस्ति :

- | | |
|----------------------|----------------|
| (1) भगवानबुद्धः | (2) राहुलः |
| (3) ब्रह्मासहाम्पतिः | (4) नागार्जुनः |

05. हस्तबालप्रकरणस्य रचनाकारः अस्ति :

- | | |
|--------------|---------------|
| (1) आर्यदेवः | (2) वसुमित्रः |
| (3) अश्वघोषः | (4) असङ्गः |

06. विशंतिकायाः रचनाकारः अस्ति

- | | |
|---------------------|---------------|
| (1) प्रज्ञाकरगुप्तः | (2) असङ्गः |
| (3) मैत्रेयनाथः | (4) वसुबन्धुः |

07. वसुबन्धोः कृत्तरस्ति :

- | | |
|--------------------|----------------------|
| (1) अधिधर्मकोशः | (2) विग्रहव्यावर्तनी |
| (3) प्रमाणवार्तिकः | (4) न्यायबिन्दुः |

08. प्रमाणवार्तिकस्य कृत्तरस्ति

- | | |
|---------------|-----------------|
| (1) वसुबन्धुः | (2) धर्मकीर्तिः |
| (3) वसुराजः | (4) नागार्जुनः |

09. योगाचारभूमिशास्त्र लेखकः अस्ति

- | | |
|-----------------|----------------|
| (1) वसुबन्धुः | (2) असङ्गः |
| (3) मैत्रेयनाथः | (4) नागार्जुनः |

10. स्कन्धानाम् सङ्ख्याः सन्ति

- | | |
|-------------|----------|
| (1) त्रयः | (2) षड् |
| (3) चत्वारः | (4) पञ्च |

11. बौद्धानां प्रमुखदार्शनिकप्रस्थानानां सङ्ख्याः सन्ति

- | | |
|----------|-------------|
| (1) पञ्च | (2) चत्वारः |
| (3) षड् | (4) त्रयः |

12. त्रिस्वभावनिर्देशः अस्य कृतिरस्ति

- | | |
|---------------|---------------|
| (1) असङ्गः | (2) वसुबन्धुः |
| (3) स्थिरमतिः | (4) सारमतिः |

13. त्रिंशिका अस्य कृतिरस्ति

- | | |
|---------------|-----------------|
| (1) स्थिरमतिः | (2) वसुबन्धुः |
| (3) असङ्गः | (4) मैत्रेयनाथः |

14. महायानसूत्रालङ्कारभाष्यस्य लेखकः अस्ति

- | | |
|-----------------|---------------|
| (1) मैत्रेयनाथः | (2) असङ्गः |
| (3) वसुबन्धुः | (4) स्थिरमतिः |

15P/276/30

15. त्रिशिकाविज्ञप्तिभाष्यस्य लेखकः अस्ति

- | | |
|---------------|---------------|
| (1) स्थिरमतिः | (2) ज्ञानमतिः |
| (3) सारमतिः | (4) वसुबन्धुः |

16. लङ्कावतारसूत्रः अस्य प्रस्थानस्य सूत्रः अस्ति

- | | |
|---------------|--------------|
| (1) माध्यमिकः | (2) वैभाषिकः |
| (3) वज्रयानः | (4) योगाचारः |

17. माध्यमिकप्रस्थानस्य प्रतिष्ठापकः आचार्यः अस्ति

- | | |
|-------------------|----------------|
| (1) मैत्रेयनाथः | (2) अश्वघोषः |
| (3) चन्द्रकीर्तिः | (4) नागार्जुनः |

18. माध्यमिककारिकायाः रचनाकारः अस्ति

- | | |
|-------------------|-----------------|
| (1) नागार्जुनः | (2) आर्यदेवः |
| (3) चन्द्रकीर्तिः | (4) बुद्धपालितः |

19. प्रसन्नपदा अस्य ग्रन्थस्य टीका अस्ति

- | | |
|--------------------|-----------------------|
| (1) चतुःशतकः | (2) मध्यमार्गसङ्ग्रहः |
| (3) माध्यमिककारिका | (4) युक्तिपष्टिका |

20. चतुःशतकस्य लेखकः अस्ति

- | | |
|-----------------|-------------------|
| (1) नागार्जुनः | (2) आर्यदेवः |
| (3) बुद्धपालितः | (4) चन्द्रकीर्तिः |

21. भार्वाववेकः अस्य प्रस्थानस्य आचार्यः अस्ति

- | | |
|-----------------------------|---------------------------|
| (1) स्वातन्त्रिकः माध्यमिकः | (2) प्रासङ्गिकः माध्यमिकः |
| (3) विज्ञानवादः | (4) सौत्रान्तिकमतः |

22. काश्मीरवैभाषिकनीतिसिद्धः प्रायो मयायं कथितोऽभिधर्मः एषा पंक्तिः अनेन ग्रन्थेन उद्धृतोऽस्ति

- | | |
|----------------------|-----------------|
| (1) अभिधर्मामृतः | (2) अभिधर्मदीपः |
| (3) अभिधर्मयालङ्कारः | (4) अभिधर्मकोशः |

23. तत्वसङ्ग्रहस्य रचनाकारः अस्ति

- | | |
|-------------------|------------------|
| (1) प्रज्ञाकरमतिः | (2) शान्तिदेवः |
| (3) बोपदेवः | (4) शान्तरक्षितः |

24. महायानसूत्रालङ्कारस्य रचनाकारः अस्ति

- | | |
|-----------------|---------------|
| (1) मैत्रेयनाथः | (2) वसुबन्धुः |
| (3) स्थिरमतिः | (4) असङ्गः |

25. भगवान्बुद्धस्य निर्वाणस्थली अस्ति

- | | |
|---------------|-------------|
| (1) कुशीनारा | (2) पावा |
| (3) श्रावस्ती | (4) सारनाथः |

26. भगवान्तथागतं बोधिः अत्र प्राप्तवान्

- | | |
|--------------|---------------|
| (1) लुम्बिनी | (2) श्रावस्ती |
| (3) सारनाथः | (4) बोधगया |

15P/276/30

27. महायानस्य नवधर्मेषु परिगणितः

- | | |
|------------------|-----------------|
| (1) अवदानकल्पलता | (2) अवदानशतकः |
| (3) दिव्यावदानः | (4) ललितविस्तरः |

28. बोधिचर्यावतारः अस्य कृतिः अस्ति

- | | |
|-------------------|-------------------|
| (1) प्रज्ञाकरमतिः | (2) शान्तिरक्षितः |
| (3) नागसेनः | (4) शान्तिदेवः |

29. हेवेनसाङ्गः अस्य देशस्य निवासी आसीत्

- | | |
|-------------|---------------|
| (1) जापानः | (2) थाईलैण्डः |
| (3) मारीशसः | (4) चीनः |

30. सिद्धार्थगौतमस्य पितुः नाम आसीत्

- | | |
|---------------|---------------|
| (1) शुद्धोदनः | (2) सिद्धनाथः |
| (3) कपिलः | (4) महादेवः |

31. सिद्धार्थस्य मातुः नाम आसीत्

- | | |
|-----------------|---------------------|
| (1) महामायादेवी | (2) गौतमी प्रजापतिः |
| (3) सुलक्षणा | (4) यशोधराः |

32. सौत्रान्तिके मते जगत् अस्ति :

- | | |
|----------------|-------------------|
| (1) प्रत्यक्षः | (2) अनुमेयः |
| (3) शून्यः | (4) विज्ञानमात्रः |

33. वैभाषिके मते जगत् अस्ति

- | | |
|--------------------------|-------------|
| (1) प्रतीयमानः | (2) अनुमेयः |
| (3) प्रत्यक्षः क्षणिकश्च | (4) शून्यः |

34. विज्ञानवादः जगत् मन्यते

- | | |
|-----------|------------|
| (1) सत् | (2) असत् |
| (3) सदसत् | (4) शून्यः |

35. लङ्कावतारसूत्रे आधारितः प्रस्थानः अस्ति

- | | |
|--------------------------|-------------------------|
| (1) योगाचारः विज्ञानवादः | (2) माध्यमिकः शून्यवादः |
| (3) सौत्रान्तिकमतः | (4) वज्रयानः |

36. शतधर्मविद्यामुखस्य रचनाकारः अस्ति

- | | |
|--------------|-----------------|
| (1) असङ्गः | (2) मैत्रेयनाथः |
| (3) हरिभद्रः | (4) वसुबन्धुः |

37. माध्यमिककारिका रचनाकारः अस्ति

- | | |
|-------------------|----------------|
| (1) असङ्गः | (2) आर्यदेवः |
| (3) चन्द्रकीर्तिः | (4) नागार्जुनः |

38. माध्यमिककारिकायां अस्य प्रस्थानस्य विवेचनः अस्ति

- | | |
|----------------|----------------|
| (1) माध्यमिकः | (2) योगाचारमतः |
| (3) वैभाषिकमतः | (4) वज्रयानः |

39. प्रमत्तपदायाः रचनाकारः अस्ति

- | | |
|----------------|-------------------|
| (1) भावाविवेकः | (2) बुद्धपालितः |
| (3) सारमतिः | (4) चन्द्रकीर्तिः |

40. वज्रयानस्य उद्गमस्थलः अस्ति

- | | |
|----------------|--------------|
| (1) बोधगया | (2) श्रीलंका |
| (3) श्रीपर्वतः | (4) सारनाथः |

41. प्रमुखानां महायानसूत्राणां सङ्ख्याः सन्ति

- | | |
|----------|---------------------|
| (1) अष्ट | (2) अष्टाधिक एकशतम् |
| (3) नव | (4) सप्त |

42. अधिधर्मकोशभाष्यस्य रचनाकारः अस्ति

- | | |
|---------------|---------------|
| (1) स्थिरमतिः | (2) यशोमित्रः |
| (3) घोषकः | (4) वसुबन्धुः |

43. असङ्गस्य योगाचारभूमिशास्त्रस्य अपरः अभिधानः अस्ति

- | | |
|--------------------------|--------------------------|
| (1) योगचर्याभूमिशास्त्रः | (2) दशभूमिविभाषाशास्त्रः |
| (3) उत्तरतन्त्रटीका | (4) तत्त्ववैशारदी |

44. बुद्धस्य अभिमतः सिद्धान्तः अस्ति :

- | | |
|-------------------------|----------------------|
| (1) चत्वारि आर्यसत्यानि | (2) चतुर्युगः |
| (3) चत्वारः प्राकाराः | (4) चत्वारः समुद्राः |

45. माहायाने बुद्धस्य कार्याणां सङ्ख्यायाः सन्ति
 (1) चत्वारः (2) पञ्च
 (3) त्रिंशः (4) द्वे
46. आर्यशूरस्य कृतिरस्ति
 (1) जातककथा (2) जातकनिस्सेनिः
 (3) जातकावलिः (4) जातकमाला
47. सुत्तनिपातः अस्य ग्रन्थस्य अंशः अस्ति
 (1) दीघनिकायस्य (2) मज्झिमनिकायस्य
 (3) खुद्धकनिकायस्य (4) धम्मसङ्गणेः
48. धम्मपदे वर्णानां सङ्ख्याः सन्ति
 (1) षड्विंशतिः (2) विंशतिः
 (3) अष्टविंशतिः (4) एकोनविंशतिः
49. धम्मपदद्वयकथायाः रचनाकारः अस्ति
 (1) धम्मपालः (2) धर्मत्रातः (3) धर्मसेनः (4) बुद्धघोषः
50. विसुद्धिमग्गस्य रचनाकारः अस्ति
 (1) बुद्धघोषः (2) धर्मपालः (3) नागसेनः (4) मैत्रेयनाथः
51. विसुद्धिमग्गस्य मुख्यः प्रतिपाद्यः अस्ति
 (1) स्थविरवादी अभिधर्मः ध्यानयोगः च
 (2) बौद्धविचारशास्त्रः
 (3) स्थविरवादी -आचारः
 (4) स्थविरवादी-तत्त्वज्ञानः

15P/276/30

52. सुहृल्लेखस्य रचनाकारः अस्ति

- (1) आर्यदेवः (2) नागार्जुनः (3) बोधिरुचिः (4) बोधिधर्मः

53. बुद्धस्य त्रिकायस्य कल्पना अत्र प्राप्तयते

- (1) धेरवादे (2) सौत्रान्तिके (3) साम्मितीये (4) महायाने

54. बोधिपाक्षिकधर्माणां सङ्ख्यायाः सन्ति

- (1) दश (2) त्रिंशत् (3) षट्त्रिंशत् (4) सप्तत्रिंशत्

55. शिक्षानाम् सङ्ख्यायाः सन्ति

- (1) दश (2) चतस्रः (3) पञ्च (4) त्रिस्रः

56. सिक्खापदानां सङ्ख्यायाः सन्ति

- (1) अष्ट (2) सप्त (3) नव (4) दश

57. सुत्तनिपातः अस्य निकायस्य अंशः अस्ति :

- (1) दीघनिकायः (2) अङ्गुत्तरनिकायः
(3) मज्झिमनिकायः (4) खुद्दकनिकायः

58. द्वयतानुपस्सनसुत्तः अस्मिन् ग्रन्थे संकलितः

- (1) दीघनिकाये (2) सुत्तनिपाते (3) कथावर्था (4) विसुधिग्गे

59. कथावत्थुप्पकरणं अस्य अध्ययक्षतायां सङ्कलितः

- (1) मोग्गलिपुत्ततिस्सस्य (2) अश्वघोषस्य
(3) कुमारलातस्य (4) बुद्धघोषस्य

60. कुडचर्या ग्रन्थस्य सम्पादकः अस्ति
 (1) भदन्तः अन्नन्दः कौसल्यायनः
 (2) भिक्षुः जगदीशः काश्यपः
 (3) राहुलः सांकृत्यायनः
 (4) भिक्षुसंघरक्षितः
61. बौद्धधर्मदर्शनग्रन्थः अस्य रचना अस्ति
 (1) आचार्यः नरेन्द्रः देवः
 (2) आचार्यः बुद्धरक्षितः
 (3) आचार्यः धर्मरक्षितः
 (4) आचार्यः सङ्घरक्षितः
62. अभिधर्मकोशभाष्यस्य संस्कृतभाषायां प्रथमः सम्पादकः अस्ति
 (1) डॉ प्रहलादः प्रधानः
 (2) राहुलः सांकृत्यायनः
 (3) आचार्यः नरेन्द्रदेवः
 (4) लादलावालेपूसे
63. वैभाषिकमते निर्वाणः अस्ति :
 (1) भावरूपः सुखस्वरूपः
 (2) अभावरूपः क्लेशप्रहाणरूपः
 (3) शान्तः
 (4) भावाभावरूपः
64. वैभाषिकमते संस्कृतधर्माणां संख्याः सन्ति
 (1) द्विसप्ततिः (2) पञ्चसप्ततिः (3) अष्टचत्वारिंशत् (4) त्रयचत्वारिंशत्
65. सीलनिदेशः अस्य ग्रन्थस्य भागः अस्ति
 (1) विसुद्धिमगो
 (2) अभिधम्मत्थसङ्ग्रहो
 (3) रावणवहो
 (4) सुत्तनिपातः

66. प्रतीत्यसमुत्पादस्य द्वादशनिदानानां क्रमाः सन्ति

(1) अविद्या	(2) अविद्या	(3) संस्कारः	(4) जातिः
संस्कारः	नामरूपः	जरामरणः	विज्ञानः
विज्ञानः	विज्ञानः	षडायतनः	नामरूपः
नामरूपः	षडायतनः	नामरूपः	षडायतनः
षडायतनः	संस्कारः	स्पर्शः	वेदना
स्पर्शः	वेदना	वेदना	स्पर्श
वेदना	स्पर्शः	तृष्णा	तृष्णा
तृष्णा	तृष्णा	उपादानः	उपादानः
उपादानः	उपादानः	भवः	भवः
भवः	भवः	जातिः	अविद्या
जातिः	जातिः	संस्कारः	संस्कारः
जरामरणः	जरामरणः	अविद्या	जरामरणः

67. 'प्रज्ञाऽमला सानुचराऽभिधर्मः' एषा पंक्तिः अस्य ग्रन्थस्य उद्धृतः अस्ति

- | | |
|-------------------|---------------------------|
| (1) अभिधर्मामृतः | (2) अभिधर्मकोशः |
| (3) अभिधर्मावतारः | (4) अभिधर्मविभाषाशास्त्रः |

68. अभिधर्मकोशस्य मान्यः हिन्दी अनुवादकः अस्ति

- | | |
|--------------------------|-----------------------------|
| (1) भिक्षुः धर्मरक्षितः | (2) गोविन्दचन्द्रः पाण्डेयः |
| (3) आचार्यः नरेन्द्रदेवः | (4) भिक्षुः जगदीश काश्यपः |

69. बर्धासन्त्वभूमेः भारतीयः सम्पादकः अस्ति
 (1) प्रो० नकामुरा (2) प्रो० वोगिहारा
 (3) प्रो० नलिनाक्षदत्तः (4) प्रो० विश्वनाथः बनर्जी
70. विग्रहव्याख्यानैः रचनाकारः अस्ति
 (1) वसुबन्धुः (2) बुद्धपालितः (3) आर्यवेदः (4) नागार्जुनः
71. पालिः मुख्यतः अस्मिन् प्रदेशे अभाषत्
 (1) मध्यान्तिके (2) मगधे (3) गौडे (4) मध्यप्रदेशे
72. बौद्धमते ध्यानस्य संख्या सन्ति
 (1) पञ्च (2) तिस्रः (3) द्वे (4) चतस्रः
73. स्फुटार्था टीकायाः लेखकः अस्ति
 (1) मनोरथनन्दी (2) स्थिरमति (3) असंगः (4) यशोमित्रः
74. बौद्धः विश्वविद्यालयः अत्र स्थितः आसीत्
 (1) विक्रमशिलायां (2) षाटने (3) चाराणस्यां (4) काश्मीरे
75. बौद्धमते स्कन्धानां संख्याः सन्ति
 (1) चतस्रः (2) तिस्रः (3) पञ्च (4) द्वे
76. बौद्धत्रिपिटके 'विज्जाचरणसम्पन्नो' अस्य विशेषणः अस्ति
 (1) सम्यक् सम्बुद्धः भगवान् शास्ता (2) आनन्दः
 (3) पञ्चवर्गीयः भिक्षुः (4) राहुलः

77. प्रसन्नपदामध्यमकवृत्तः रचनाकारः अस्ति
(1) बुद्धपालितः (2) भावविवेकः (3) चन्द्रकीर्तिः (4) गुणभद्रः
78. दोहाकोशस्य सम्पादकः अस्ति
(1) आचार्यः नरेन्द्रदेवः (2) भिक्षुः जगदीशः काश्यपः
(3) महापण्डितः राहुलः सांकृत्यायनः (4) परशुरामः चतुर्वेदी
79. विग्रहव्यावर्तनेः विषयः अस्ति
(1) न्यायसिद्धान्तः (2) माध्यमिकः तर्कपद्धतिः
(3) वैभाषिकः तर्कवादः (4) सौत्रान्तिकः सिद्धान्तः
80. विदेशेषु बौद्धधर्मस्य प्रचारः सर्वप्रथमः अयं सम्राटः कृतवान्
(1) चन्द्रगुप्तः मौर्यः (2) बिन्दुसारः (3) अशोकः (4) महापद्मनन्दः
81. सङ्घमित्रा अस्य पुत्री आसीत् :
(1) बिन्दुसारस्य (2) अशोकस्य (3) हरिषेणस्य (4) चन्द्रगुप्तमौर्यस्य
82. महेन्द्रः अस्य भारतीयसम्राटस्य धर्मदूतं भूत्वा सिंहलं गतवान्
(1) बिन्दुसारस्य (2) अशोकस्य
(3) चन्द्रगुप्तमौर्यस्य (4) कालाशोकस्य
83. बौद्धधर्मस्य विरोधी सम्राटः आसीत्
(1) पुष्यमित्रः शुङ्गः (2) चन्द्रगुप्तः विक्रमादित्यः
(3) काचः (4) श्रीगुप्तः

84. अस्य सम्राटस्य स्तम्भलेखः प्रथमः ऐतिहासिकः प्रमाणः मन्यते
 (1) खारवेलः (2) रुद्रदामनः (3) चन्द्रगुप्तमौर्यः (4) अशोकः
85. अशोकस्य अभिलेखानां सङ्ख्याः सन्ति :
 (1) चतुर्दश (2) द्वादश (3) दश (4) द्वे
86. जूनागढ़स्य शिलारायां एतानां शासकानां लेखानि उत्कीर्णानि सन्ति
 (1) अशोकः, रुद्रदामनः (2) चन्द्रगुप्तः, श्रीगुप्तः
 (3) प्रभावती गुप्ता, चन्द्रगुप्तः (4) समुद्रगुप्तः, रामगुप्तः
87. अनिरोधमनुत्पादमनुच्छेदमशाश्वतम् ।
 अनेकार्थमनानार्थमनागममनिर्गमम् ॥
 यः प्रतीत्यसमुत्पादं प्रपञ्चोपशमं शिवम् ।
 देशयामास सम्बुद्धस्तं वन्दे वदतां वरम् ॥
- एतासां कारिकानां अस्य ग्रन्थस्य उद्धृताः सन्ति
 (1) विग्रहव्यावर्तनी (2) शून्यतासप्ततिः
 (3) चतुःस्तवः (4) माध्यमिककारिका
88. सीरियायां सर्वप्रथमः अयं भारतीयः शासकं दूतानि प्रेषितः
 (1) चन्द्रगुप्तः मौर्यः (2) बिन्दुसारः
 (3) अशोकः (4) कालाशोकः

15P/276/30

89. सौन्दरनन्दमहाकाव्यस्य लेखकः अस्ति

- (1) आर्यभट्टः (2) आर्यशूरः (3) नागार्जुनः (4) अश्वघोषः

90. चतुःअशीतिः सिद्धानां सम्बन्धः अनेन सम्प्रदायेन अस्ति

- (1) महायानः (2) थेरवादः (3) सहजयानः (4) शून्यवादः

91. बौद्धइतिहास्य प्रथमः लेखकः सङ्ग्रहीतः अस्ति

- (1) बुदोनः (2) फाह्यानः
(3) ह्वेनसांगः (4) लामा तारानाथः

92. ह्वेनसाङ्गः अस्य देशस्य निवासी आसीत्

- (1) तिब्बतः (2) भारतः (3) चीनः (4) स्यामः

93. कमलशीलस्य रचना अस्ति

- (1) तत्त्वसङ्ग्रहः (2) तत्त्वसङ्ग्रहःपञ्जिका
(3) बोधिचार्यावतारपञ्जिका (4) माध्यमिककारिका

94. प्रमाणवार्तिकभाष्यस्य रचनाकारः अस्ति

- (1) प्रज्ञाकरगुप्तः (2) शान्तिदेवः (3) शान्तरक्षितः (4) कमलशीलः

95. साधनमालायाः सम्पादकः अस्ति

- (1) हरप्रसादशास्त्रीः (2) शान्तिभिक्षुः शास्त्री
(3) विनयतोषः भट्टाचार्यः (4) विधुशेखरः भट्टाचार्यः

96. महायानविशेषकस्य प्रथमः सम्पादकः पुनरुद्धारकश्च अस्ति
 (1) शान्तिभिक्षुशास्त्री (2) विधुशेखरः भट्टाचार्यः
 (3) प्रबोध चन्द्रवागची (4) अय्यास्वामी शास्त्री
97. 'शतधर्मविद्यामुखम्' अस्य रचना मन्यते
 (1) असङ्गः (2) मैत्रेयनाथः (3) प्रज्ञाकरमतिः (4) वसुबन्धुः
98. त्रिंशिकाविज्ञापिभाष्यः अस्य रचना अस्ति
 (1) सारमतिः (2) विमलमतिः (3) धर्मकीर्तिः (4) स्थिरमतिः
99. शिक्षासमुच्चये अस्य सम्प्रदायस्य सूत्राणां उद्धरणानि सङ्कलितानि सन्ति
 (1) अधिधर्मः (2) विज्ञानवादः (3) शून्यवादः (4) महायानः
100. धम्मविजयस्य उल्लेखः अस्य सम्राटस्य शिलालेखेषु अभवत्
 (1) अशोकस्य (2) खारवेलस्य
 (3) चन्द्रगुप्तमौर्यस्य (4) बिन्दुसारस्य
101. कालचक्रयाने निर्वाणस्य अधिधामः अस्ति :
 (1) महासुखनिरोधः (2) महासुखः
 (3) निरोधसमापत्तिः (4) विशुद्धविज्ञानधातुः
102. माध्यमिक मते निर्वाणः अस्ति
 (1) निरुपधिशेषः (2) विमलविज्ञानधातुः
 (3) भावनिःस्वभावता (4) सुखरूपः

15P/276/30

103. नागार्जुनस्य आविर्भावस्य मान्यः समयः अस्ति

- | | |
|--------------------------|---------------------------|
| (1) द्वितीयशताब्दी ई०पू० | (2) द्वितीयशताब्दी ईस्वी० |
| (3) पञ्चमशताब्दी ईस्वी० | (4) चतुर्थशताब्दी ई०पू० |

104. धर्मकीर्तिः जन्मः अत्र अभवत्

- | | |
|------------------------|-----------------|
| (1) तिरुमलडू (चोलदेशे) | (2) महाराष्ट्रे |
| (3) ओडिष्याने | (4) पेशावरे |

105. वसुन्धोः जन्मः अत्र अभवत्

- | | | | |
|-------------|----------------|------------|-------------|
| (1) पेशावरे | (2) अयोध्यायां | (3) भोपाले | (4) बंगदेशे |
|-------------|----------------|------------|-------------|

106. चतुःशतकस्य रचनाकारः अस्ति

- | | | | |
|---------------|----------------|---------------|--------------|
| (1) वसुबन्धुः | (2) नागार्जुनः | (3) कुमारलातः | (4) आर्यदेवः |
|---------------|----------------|---------------|--------------|

107. चतुःशतकवृत्तेः रचनाकारः अस्ति

- | | | | |
|---------------|-----------------|-------------------|---------------|
| (1) भावविवेकः | (2) बुद्धपालितः | (3) चन्द्रकीर्तिः | (4) स्थिरमतिः |
|---------------|-----------------|-------------------|---------------|

108. महायानसूत्रालङ्कारस्य रचनाकारः अस्ति

- | | | | |
|-----------------|------------|----------------|--------------|
| (1) मैत्रेयनाथः | (2) असङ्गः | (3) नागार्जुनः | (4) आर्यदेवः |
|-----------------|------------|----------------|--------------|

109. बौद्धन्यायस्य सर्वाधिकः प्रामाणिकः आधारग्रन्थः अस्ति

- | | |
|----------------------|----------------------|
| (1) प्रमाणवार्त्तिकः | (2) सम्बन्धः परीक्षा |
| (3) न्यायः प्रवेशः | (4) न्यायविनिश्चयः |

110. बौद्धदेवीदेवतानां स्वरूपोपासनापद्धतः एतेषु ग्रन्थेषु वर्णिताः

- (1) साधनग्रन्थः (2) महायानसूत्रः (3) प्रज्ञापारमितायाः (4) त्रिपिटकः

111. निष्पन्नयोगावलेः रचनाकारः अस्ति

- (1) नीलाम्बरपादः (2) अभयाकरगुप्तः
(3) कम्बलपादः (4) सरहपादः

112. वज्रसूचेः रचनाकारः अस्ति :

- (1) शङ्कराचार्यः (2) नागार्जुनः (3) चन्द्रकीर्तिः (4) अश्वघोषः

113. ललितविस्तरस्य हिन्दुनुवादकस्य नामास्ति

- (1) हरप्रसादःशास्त्री (2) मनमोहनःघोषः
(3) प्रबोधः चन्द्रः बागची (4) शान्तिः भिक्षुः शास्त्री

114. आचार्यस्य नरेन्द्रदेवस्य कृत्तिरस्ति

- (1) बौद्धदर्शनः (2) बौद्धसहजयोगः
(3) बौद्धधर्मदर्शनः (4) अधिधर्मदर्शनः

115. दोहाकोशगीतिः अस्य रचना अस्ति :

- (1) सरहपा (2) कम्बलपादः (3) आर्यदेवः (4) गुंडुरीपा

116. सिद्धाचार्येषु प्रमुखः अस्ति

- (1) कम्बलपादः (2) सरहपा (3) लुईपा (4) शान्तिपा

15P/276/30

117. तिल्लोपायाः दोहाकोशस्य सम्पादकः अस्ति

- | | |
|---------------------------|---------------------------|
| (1) हरप्रसादः शास्त्री | (2) शान्तिभिक्षुःशास्त्री |
| (3) प्रबोधः चन्द्रः बागची | (4) विधुशेखरभट्टाचार्यः |

118. कम्बलाम्बरपादः अस्य अपरः अभिधानः अस्ति

- | | | | |
|----------------|--------------|-----------|---------------|
| (1) नागार्जुनः | (2) आर्यदेवः | (3) सरहपा | (4) कम्बलपादः |
|----------------|--------------|-----------|---------------|

119. लुईपा अस्य अपरः अभिधानः अस्ति

- | | |
|----------------|----------------------|
| (1) आदिनाथः | (2) मत्स्येन्द्रनाथः |
| (3) गोरक्षनाथः | (4) सङ्गभद्रः |

120. अभिधर्मसमुच्चयस्य प्रथमः पुनरुद्धारकर्ता अस्ति

- | | |
|----------------------------|-----------------------------|
| (1) शान्तिभिक्षुः शास्त्री | (2) प्रह्लादः प्रधानः |
| (3) जगन्नाथः उपाध्यायः | (4) नागेन्द्रनाथः उपाध्यायः |

121. हेवन्नतन्त्रस्य भारतीयः संस्करणः अत्रतः प्रकाशितः अस्ति

- | | |
|------------------|-----------------------|
| (1) नयी दिल्लीतः | (2) सारनाथः वाराणसीतः |
| (3) पटनातः | (4) कोलकातातः |

122. गोविन्दचन्द्रस्य पाण्डेः कृतिरस्ति

- | | |
|-----------------------------------|-----------------------|
| (1) बौद्धधर्मस्य विकासस्य इतिहासः | (2) बौद्धदर्शनः |
| (3) बौद्धधर्मदर्शनः | (4) बौद्धदर्शनमीमांसा |

123. तान्त्रिकवाङ्मयसाधनासाहित्यस्य ग्रन्थस्य लेखकः अस्ति :

- | | |
|------------------------------|-----------------------|
| (1) आचार्यः नरेन्द्रदेवः | (2) जगन्नाथः उपाध्याय |
| (3) नागेन्द्रः नाथः उपाध्याय | (4) गोपीनाथः कविराजः |

124. बोधसत्त्वपिटकः अनेन सम्प्रदायेन सम्बन्धितः अस्ति :

- | | | | |
|-------------|-------------|----------------|-------------|
| (1) हीनयानः | (2) महायानः | (3) तन्त्रयानः | (4) सहजयानः |
|-------------|-------------|----------------|-------------|

125. दशभूमकसूत्रः अस्य सम्प्रदायस्य सूत्रः अस्ति :

- | | |
|------------------|--------------|
| (1) कालचक्रयानः | (2) वैभाषिकः |
| (3) सौत्रान्तिकः | (4) महायानः |

126. दशभूमीश्वरसूत्रः अस्य सूत्रस्य अपरः अभिधानः अस्ति :

- | | |
|-------------------|-----------------------------------|
| (1) दशभूमकसूत्रः | (2) अष्टसाहस्रिका प्रज्ञापारिमिता |
| (3) ललितः विस्तरः | (4) सुवर्णप्रभाससूत्रः |

127. कालचक्रतन्त्रस्य सम्पादकः अस्ति :

- | | |
|-------------------------|--------------------------|
| (1) विधुशेखरभट्टाचार्यः | (2) विश्वनाथः बनर्जी |
| (3) मानवेन्दुः बनर्जी | (4) दिनयतोषः भट्टाचार्यः |

128. महायानसङ्ग्रहं अस्य रचना मन्यते :

- | | | | |
|-----------|---------------|--------------|----------------|
| (1) असंगः | (2) वसुबन्धुः | (3) आर्यदेवः | (4) नागार्जुनः |
|-----------|---------------|--------------|----------------|

129. महायानसम्परिग्रहशास्त्रस्य रचनाकारः अस्ति :

- | | | | |
|-----------------|--------------|--------------|------------|
| (1) मैत्रेयनाथः | (2) हर्षदेवः | (3) आर्यदेवः | (4) असङ्गः |
|-----------------|--------------|--------------|------------|

15P/276/30

130. 'सम्यग्ज्ञानपूर्विकासर्वपुरुषार्थमिद्विरिति तदव्युत्पाद्यते' अयं सूत्रः अनेन ग्रन्थेन उद्धृतः अस्ति

- | | |
|--------------------|------------------|
| (1) हेतुबिन्दुटीका | (2) न्यायबिन्दुः |
| (3) प्रमाणसमुच्चयः | (4) न्यायबिन्दुः |

131. स्वलक्षणमूलः अस्ति

- | | |
|----------------------|-------------------|
| (1) प्रत्यक्षप्रमाणः | (2) शब्दः |
| (3) स्वार्थानुमानः | (4) परार्थानुमानः |

132. "कल्पनापोदमभ्रान्तं प्रत्यक्षं निर्विकल्पकम्" अयं कारिकांशः अनेन ग्रन्थेन उद्धृतः अस्ति

- | | |
|---------------------|----------------------|
| (1) प्रमाणसमुच्चयेन | (2) हेतुबिन्दुना |
| (3) प्रमाणवार्तिकेन | (4) प्रमाणविनिश्चयेन |

133. आगमं प्रमाणः मन्यते

- | | | | |
|------------|----------------|-------------------|---------------|
| (1) असङ्गः | (2) नागार्जुनः | (3) चन्द्रकीर्तिः | (4) भावविवेकः |
|------------|----------------|-------------------|---------------|

134. शब्दात्मकः अनुमानः अस्ति

- | | | | |
|-------------------|------------|---------------|--------------------|
| (1) परार्थानुमानः | (2) अन्वयः | (3) व्याप्तिः | (4) स्वार्थानुमानः |
|-------------------|------------|---------------|--------------------|

135. बौद्धप्रमाणवादस्य प्रारम्भः अस्य कृतिषु प्राप्यते

- | | | | |
|--------------|-----------|--------------|---------------|
| (1) मैत्रेयः | (2) असंगः | (3) हर्षदेवः | (4) कुमारलातः |
|--------------|-----------|--------------|---------------|

136. पञ्चस्कन्धप्रकरणस्य रचनाकारः अस्ति

- | | | | |
|-----------|-----------------|---------------|---------------|
| (1) असंगः | (2) मैत्रेयनाथः | (3) वसुबन्धुः | (4) स्थिरमतिः |
|-----------|-----------------|---------------|---------------|

137. माध्यमिककारिकायां प्रकरणाः सन्ति

- (1) त्रिंशत् (2) अष्टविंशतिः (3) सप्तविंशतिः (4) पञ्चविंशतिः

138. त्रिस्वभावे श्रेष्ठपदः अस्ति

- (1) परिकल्पितलक्षणः (2) परिनिष्पन्नलक्षणः
(3) निरूपधिषोषः (4) पूरतन्त्रलक्षणः

139. वज्रच्छेदिका प्रज्ञापारमिता अस्य प्रस्थानस्य आधारभूतः ग्रन्थः अस्ति

- (1) माध्यमिकः (2) सौत्रान्तिकः (3) वैभाषिकः (4) योगाचारः

140. अष्टसाहस्रिकाप्रज्ञापारमितायाः नवधर्मेषु अयं क्रमः अस्ति

- (1) द्वितीयः (2) तृतीयः (3) पञ्चमः (4) प्रथमः

141. बुद्धस्य प्रथमः प्रामाणिकः जीवनी अस्ति

- (1) दशभूमकसूत्रः (2) ललितविस्तरः
(3) दशबलस्तवः (4) लङ्कावतारसूत्रः

142. ललितविस्तरस्य प्रथमः भारतीयः सम्पादकः अस्ति ;

- (1) राजेन्द्रः लालः मिश्रः (2) लेफमानः
(3) नलिनाक्षदत्तः (4) राहुलः सांकृत्यायनः

143. पी०वी० बापटः अस्ति :

- (1) एकः पालिः विद्वान् (2) एकः संस्कृतविद्वान्
(3) एकः जैनः दार्शनिकः (4) एकः चीनीविद्वान्

15P/276/30

144. धम्मपालः आसीत् एकः

- | | |
|------------------|-------------------------|
| (1) अट्टकथालेखकः | (2) कविः |
| (3) नाटककारः | (4) शास्त्रीयः विद्वान् |

145. 'आयद्वारो ह्यापतनं गोत्रं धातुर्निरुच्यते' - अयं कारिकाशः अनेन ग्रन्थेन उद्धृतः अस्ति

- | | |
|-----------------|------------------|
| (1) अभिधर्मकोशः | (2) अभिधर्मामृतः |
| (3) अभिधर्मदीपः | (4) स्फुटार्थाः |

146. समन्तपासादिका अस्य कृतिरस्ति

- | | | | |
|--------------|-----------|----------------|---------------|
| (1) धम्मपालः | (2) घोषकः | (3) धर्मत्रातः | (4) बुद्धघोषः |
|--------------|-----------|----------------|---------------|

147. जातकट्टकथायाः हिन्द्यनुवादकः अस्ति

- | | |
|--------------------------|------------------------------|
| (1) राहुलः सांकृत्यायनः | (2) भिक्षुधर्मरक्षितः |
| (3) भिक्षुः बुद्धरक्खितः | (4) भदन्तः आनन्दः कौसल्यायनः |

148. शिक्षसमुच्चयः अस्य कृतिरस्ति

- | | | | |
|----------------|------------------|----------------|-------------|
| (1) शान्तिपादः | (2) शान्तरक्षितः | (3) शान्तिदेवः | (4) कमलशीलः |
|----------------|------------------|----------------|-------------|

149. दिङ्नागस्य कृतिरस्ति

- | | |
|----------------------|------------------|
| (1) प्रमाणवार्त्तिकः | (2) न्यायप्रवेशः |
| (3) हेतुतत्त्वोपदेशः | (4) तर्कभाषा |

150. सौत्रान्तिकजगत् मन्यते

- | | |
|-------------------------|----------------|
| (1) अनुमेयः | (2) प्रत्यक्षः |
| (3) ज्ञानकारः निस्वभावः | (4) शान्तः |

15P/276/30

ROUGH WORK
एफ कार्य

27

P.T.O.

i

अभ्यर्थियों के लिए निर्देश

(इस पुस्तिका के प्रथम आवरण पृष्ठ पर तथा उत्तर-पत्र के दोनों पृष्ठों पर केवल नीली-काली बाल-प्वाइंट पेन से ही लिखें)

1. प्रश्न पुस्तिका मिलने के 10 मिनट के अन्दर ही देख लें कि प्रश्नपत्र में मर्भा पृष्ठ मौजूद हैं और कोई प्रश्न छूटा नहीं है। पुस्तिका दोषयुक्त पाये जाने पर इसकी सूचना तत्काल कक्ष-निरीक्षक को देकर सम्पूर्ण प्रश्नपत्र की दूसरी पुस्तिका प्राप्त कर लें।
2. परीक्षा भवन में लिफाफा रहित प्रवेश-पत्र के अतिरिक्त, लिखा या सादा कोई भी खुला कागज साथ में न लायें।
3. उत्तर-पत्र अलग से दिया गया है। इसे न तो मोड़ें और न ही विकृत करें। दूसरा उत्तर-पत्र नहीं दिया जायेगा। केवल उत्तर-पत्र का ही मूल्यांकन किया जायेगा।
4. अपना अनुक्रमांक तथा उत्तर-पत्र का क्रमांक प्रथम आवरण-पृष्ठ पर पेन से निर्धारित स्थान पर लिखें।
5. उत्तर-पत्र के प्रथम पृष्ठ पर पेन से अपना अनुक्रमांक निर्धारित स्थान पर लिखें तथा नीचे दिये वृत्तों को गाढ़ा कर दें। जहाँ-जहाँ आवश्यक हो वहाँ प्रश्न-पुस्तिका का क्रमांक तथा सेट का नम्बर उचित स्थानों पर लिखें।
6. ओ० एम० आर० पत्र पर अनुक्रमांक संख्या, प्रश्नपुस्तिका संख्या व सेट संख्या (यदि कोई हो) तथा प्रश्नपुस्तिका पर अनुक्रमांक और ओ० एम० आर० पत्र संख्या की प्रविष्टियों में उपरिलेखन की अनुमति नहीं है।
7. उपर्युक्त प्रविष्टियों में कोई भी परिवर्तन कक्ष निरीक्षक द्वारा प्रमाणित होना चाहिये अन्यथा यह एक अनुचित साधन का प्रयोग माना जायेगा।
8. प्रश्न-पुस्तिका में प्रत्येक प्रश्न के चार बैकल्पिक उत्तर दिये गये हैं। प्रत्येक प्रश्न के बैकल्पिक उत्तर के लिए आपको उत्तर-पत्र की सम्बन्धित पंक्ति के सामने दिये गये वृत्त को उत्तर-पत्र के प्रथम पृष्ठ पर दिये गये निर्देशों के अनुसार पेन से गाढ़ा करना है।
9. प्रत्येक प्रश्न के उत्तर के लिए केवल एक ही वृत्त को गाढ़ा करें। एक से अधिक वृत्तों को गाढ़ा करने पर अथवा एक वृत्त को अपूर्ण भरने पर वह उत्तर गलत माना जायेगा।
10. ध्यान दें कि एक बार स्याही द्वारा अंकित उत्तर बदला नहीं जा सकता है। यदि आप किसी प्रश्न का उत्तर नहीं देना चाहते हैं, तो संबंधित पंक्ति के सामने दिये गये सभी वृत्तों को खाली छोड़ दें। ऐसे प्रश्नों पर शून्य अंक दिये जायेंगे।
11. रफ कार्य के लिए प्रश्न-पुस्तिका के मुखपृष्ठ के अंदर वाला पृष्ठ तथा उत्तर-पुस्तिका के अंतिम पृष्ठ का प्रयोग करें।
12. परीक्षा के उपरान्त केवल ओ एम आर उत्तर-पत्र परीक्षा भवन में जमा कर दें।
13. परीक्षा समाप्त होने से पहले परीक्षा भवन से बाहर जाने की अनुमति नहीं होगी।
14. यदि कोई अभ्यर्थी परीक्षा में अनुचित साधनों का प्रयोग करता है, तो वह विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित दंड का/की, भागी होगा/होगी।